



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-

जितेन्द्र वर्मा

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - जितेन्द्र वर्मा

संस्मरण
“छात्रावास”



“छात्रावास” -

होस्टल लाइफ़ की कुछ अविस्मरणीय यादें

बात उस समय की है, जब मैं जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षा शास्त्री (B.Ed.) का छात्र रहा। कल जब मेरे परम मित्र दिवाकर झा से राजनीति विषय को लेकर कुछ वाद-विवाद और चर्चा हुई, तो अतीत के कई लम्हे फिर से जीवंत हो उठे।

सबसे अधिक खुशी इस बात की हुई कि दिवाकर जी सत्य को पूर्णता के साथ स्वीकार करते हैं, उसे समझते हैं और अपने ज्ञान, अनुभव एवं तथ्यों के साथ संवाद के माध्यम से अपनी बात रखते हैं।

दिवाकर झा मूलतः बिहार से हैं और वर्तमान में दिल्ली में TGT संस्कृत शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। शिक्षा शास्त्री के दौरान हम सहपाठी रहे। हमारा स्वभाव बिल्कुल अलग था। मैं हँसी-मजाक से भरपूर था और ऐसा लगता था कि मेरे ऊपर कभी गंभीरता का साम्राज्य स्थापित ही नहीं हो पाया। 😊

मेरे इसी हँसमुख स्वभाव के कारण कई बार हमें अध्यापकों और अध्यापिकाओं से डॉट-फटकार भी सुननी पड़ती थी। एक समय तो ऐसा आया कि मेरे स्वभाव से परेशान होकर मित्र दिवाकर झा ने अपना स्थान ही बदल लिया। उनका कहना था—

“तुम हमेशा डॉट खिलवाते रहते हो!” 😂

हालाँकि ज्यादा समय तक हम दूर नहीं रह पाए। उनकी सिंगिंग भी बड़ी प्यारी है, इसलिए दोस्ती फिर अपनी पुरानी जगह लौट आई।

सुमन मैम की समझदारी

हमारी सुमन मैम (English Teacher) हमें अच्छी तरह समझती थीं। उन्होंने हमारे हँसमुख स्वभाव को कभी गलत नजर से नहीं देखा और न ही हमें अनावश्यक रूप से प्रताड़ित किया।

उनका कहना था—

“कुछ लोग स्वभाव से ही हँसमुख होते हैं।”

आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि उस समय हमारे स्वभाव को समझने के लिए सुमन मैम का धन्यवाद करना चाहिए। ऐसे शिक्षक विद्यार्थी के जीवन में हमेशा याद रहते हैं।



अब बात छात्रावास की...

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय का छात्रावास भी अपने आप में एक अलग ही दुनिया था। वहाँ तीन विंग हुआ करती थीं और हर विंग की अपनी अलग पहचान थी।

पहली विंग अपनी शरारती गतिविधियों के लिए जानी जाती थी।

तीसरी विंग संस्कृत के प्रकांड विद्वान शिक्षा शास्त्री सहपाठियों की हुआ करती थी, जहाँ बड़े ही ज्ञानी और अनुभवी लोग रहते थे।

और दूसरी विंग हमारी थी—मेरी, मेरे मित्रों और मेरे जैसे सीधे-सादे एवं मध्यम स्तर के ज्ञान रखने वाले लोगों की। 😊

हालाँकि इसमें भी कुछ ऐसे महाशय थे, जिन्हें देखकर लगता था कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती!

रात दो बजे की वह शरारत

एक दिन मध्यरात्रि को किसी ने हमारी विंग के सारे दरवाजे बाहर से लॉक कर दिए। ऐसी स्थिति में मुझे अपने रूममेट और बड़े भाई कपिल चित्तौड़िया की सलाह माननी पड़ी।

मेरे कमरे के ठीक नीचे वाली पंक्ति में अरुण धाँधु का कमरा हुआ करता था। उन्होंने पूछा भी कि रात में किसी ने पानी फेंका था या कुछ और हुआ था। मैंने उस समय यह गोपनीय बात साझा नहीं की। 😊

इसके बाद मैंने और मेरे मित्र दिवाकर झा ने मिलकर उन शरारती तत्वों को सबक सिखाने की योजना बनाई।

अक्सर अखबारों में दिखाई देने वाले “जापानी तेल—कहाँ से लाते हो इतना जोश?” जैसे विज्ञापन की कटिंग हमने रात करीब दो बजे सभी के दरवाजों के आगे चسपा कर दी।

सुबह जब सबकी नजर उन कटिंग्स पर पड़ी तो पूरे छात्रावास में खूब हँसी-मजाक हुआ। उस समय शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि ये छोटी-सी शरारत वर्षों बाद एक संस्मरण का हिस्सा बन जाएगी। 😄

शक की सुई

यह गोपनीय बात बाद में मेरे मित्र दिवाकर, कपिल और अरुण धाँधु तक भी पहुँच गई। अरुण धाँधु को पहले से ही शक था कि “यह काम तुम ही कर सकते हो!” 😊

शायद अपने शक को पक्का करने के लिए उन्होंने एक कागज की कटिंग पर शेर का चित्र बनाकर अपने दरवाजे पर चिपका दिया और दूसरी कटिंग पर लोमड़ी का चित्र बनाकर दिवाकर जी के दरवाजे पर चसपा कर दी।

इसके बाद तो हमारी शरारतों का सिलसिला और भी मजेदार हो गया।

कभी धाँधु जी का दरवाजा बाहर से बंद कर देना, कभी उन्हें परेशान करना और कभी नहाते समय दरवाजा बंद करके भाग जाना—ऐसी न जाने कितनी छोटी-छोटी शरारतें थीं, जिन पर आज भी याद करके हँसी आ जाती है। 😄

कुछ यादें शब्दों से परे होती हैं...

छात्रावास जीवन की ऐसी बहुत सारी यादें हैं, बहुत सारे पात्र हैं और हँसी के अनगिनत पल हैं, जिन्हें शब्दों में पूरी तरह बयां करना शायद संभव नहीं।

वास्तव में होस्टल लाइफ़ विद्यार्थी जीवन का वह हिस्सा है, जिसे इंसान चाहकर भी कभी नहीं भूल सकता।

वहाँ की दोस्ती, शरारतें, डाँट, हँसी-मजाक, रातों की बातें, साथियों का अपनापन और छोटी-छोटी घटनाएँ—समय बीत जाने के बाद भी मन के किसी कोने में वैसी ही जीवित रहती हैं।

आज जब उन दिनों को याद करता हूँ तो लगता है कि जिंदगी की सबसे खूबसूरत पूँजी वही यादें हैं, जिन्हें हम जीते समय साधारण समझते हैं।

छात्रावास ने हमें सिर्फ शिक्षा नहीं दी, बल्कि दोस्ती, अपनापन, धैर्य और जिंदगी को हँसते हुए जीना भी सिखाया। ❤️

***** विशेष सूचना *****

सभी पात्र एवं घटनाएँ वास्तविक हैं और इनका वास्तविक जीवन से गहरा संबंध है। यदि कहीं किसी घटना की विलोमता प्रतीत हो, तो उसके लिए शक्ति... शक्ति... शक्तिमान! 😊😊😊

🙏 धन्यवाद 🙏

लेखक परिचय

नाम – जितेन्द्र वर्मा
निवास – सवाई माधोपुर





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..... **जितेन्द्र वर्मा**जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

